पाठ-7

सिक्के की आत्मकथा

- लेखकगण

आइए सीखें

◆ आत्मकथा विधा से अवगत होना ◆ देश की मुद्रा एवं राष्ट्रीय चिह्न से परिचित होना ◆ विभिन्न धातुओं से बनने वाले सिक्कों की जानकारी ◆ विलोम शब्द एवं वचन परिवर्तन का ज्ञान।

मैं एक सिक्का हूँ गोल-गोल चमकदार। मेरा रूप सदियों से मनुष्य के मन को मोहित करता रहा है। वह मुझे पाकर आनन्द से खिल उठता है। जेब में रहता हूँ तो जेब गर्म हो जाती है और मनुष्य प्रसन्न। जेब में नहीं रहता हूँ तो जेब खाली और मनुष्य उदास।

मेरे इस मनमोहक रूप के पीछे एक लम्बी कहानी है। मेरा रूप पहले ऐसा नहीं था जैसा तुम अभी देख रहे हो। क्या तुम मेरी कहानी सुनना चाहोगे?

मैं पहले इस रूप में नहीं था बल्कि धरती की सतह के अन्दर अपने अयस्क रूप में आनन्द के साथ रहता था। एक दिन ठक-ठक करके किसी ने धरती के उस कोने को खोदा जहाँ हम रहते थे। हम कई लोगों की पदचापें सुनते रहे। कई मशीनों की गड़गड़ाहट भी वातावरण में गूँजने लगी। यहाँ तक कि धरती के सीने में एक भारी-भरकम सुरंग खोदकर लोग मेरे घर की चहारदीवारी तक उतर आए। उनके हाथों में कुछ यन्त्र थे। उनके चेहरे पर अजीब सी नकाबें थीं। उनके सिर की गोल-गोल टोपी पर एक तेज प्रकाश जल रहा था। वे हमारी ओर ललचाई हुई आँखों से देख रहे थे। वे मशीनों से हमारी दुनिया पर चोट करते रहे और हमारे चमकते हुए टुकड़ों को बटोरकर बाहर ले आए।

शिक्षण संकेत

◆ छात्रों को विभिन्न प्रकार के सिक्कों के बारे में बताएँ ◆ विभिन्न देशों की मुद्राओं के सम्बन्ध में जानकारी दें ◆ छात्रों को बचत करने की प्रेरणा दें ◆ बच्चों को अपनी पसंद की किसी वस्तु पर आत्मकथात्मक शैली में कहानी लिखने की प्रेरणा दें।

मुझमें अनेक प्रकार की धातुएँ और बहुत-सी अशुद्धियाँ मिली हुईं थीं। मुझे धधकती हुई भट्टी में डालकर शुद्ध किया गया और टकसाल पहुँचाया गया।

टकसाल की चहल-पहल देखकर मुझे नवीन वातावरण का अनुभव हुआ किन्तु जल्दी ही पता चला कि मेरी आगे की यात्रा भी बड़ी कष्टप्रद है। एक दिन मुझे कड़ाह में डालकर पुनः भट्टी पर चढ़ा दिया गया। आग का ताप इतना बढ़ा कि मेरा शरीर पिघलने लगा। अत्यधिक पीड़ा के कारण मैं बेहोश हो गया।

जब मुझे होश आया तो मैंने अपने आपको अनेक टुकड़ों में बँटा पाया। मेरे टुकड़े होने पर भी मेरा अस्तित्व वही था। वहाँ मेरे जैसे हजारों साथी मेरे साथ थे।

मेरी विश्वसनीयता और पहचान के लिए प्राचीन समय से ही राजाओं ने मेरे एक ओर अपने राज्य की मुद्रा तथा दूसरी ओर मेरा मूल्य अंकित कर ढाला। अब मैं सिक्का कहलाने लगा। अपने वैभव और सम्मान के लिए उन्होंने कभी सोने और चाँदी में मुझे ढाला तो कभी ताँबे और अन्य धातुओं के मिश्रण से मुझे बनाया। यहाँ तक कि भारतीय इतिहास में उल्लिखित एक राजा ने तो अपनी पहचान चमड़े के रूप में मुझे चलाकर अर्जित की।

स्वतंत्रता के बाद मेरा एक नया रूप देखने में आया। प्रजातंत्र के परिवेश में मेरा मान और बढ़ा। मेरे एक ओर अशोक चिह्न तथा दूसरी ओर मेरा मूल्य व जन्म वर्ष अंकित किया गया। मुझे इस बात का गौरव है कि मैं समाज के हर वर्ग के पास रहकर समाज में सबको समान सेवाएँ दे रहा हूँ इसीलिए सब लोग मेरा आदर करते हैं। यदि मैं व्यक्ति की असावधानी से या फटी जेब से गिरा भी तो किसी की नज़र पड़ते ही उसने मुझे हाथों-हाथ उठा लिया।

मैं जन-सेवा के लिए सदैव तत्पर हूँ। लोगों तक पहुँचाने के लिए मुझे अपने कई साथियों के साथ टकसाल से बैंक तक भेजा गया। बैंक से लोग मुझे अपने साथ ले गए। घर पहुँचते ही एक नन्हीं-सी गुड़िया ने अपने पिताजी से मुझे माँग लिया। गुड़िया ने पेंसिल खरीदने के लिए मुझे दुकानदार को दे दिया। दुकानदार ने चाय का स्वाद लेने के बदले चायवाले को सौंप दिया, चाय वाले ने सब्जी वाले को और सब्जीवाले ने दूधवाले को। दूधवाले के बच्चे ने मुझे मिट्टी से बनी 'गुल्लक' में डाल दिया। यह न समझना कि मैं गुल्लक में अपने अन्य साथियों के साथ कैद हूँ बल्कि यह तो मेरा विश्राम

भवन है। यहाँ मैं अपने साथियों के साथ आराम से हूँ। गुल्लक से मैंने जब घरवालों की बातों को सुना तो पता चला कि मुझे गुल्लक में डाला जाना उनकी 'अल्पबचत' है। आर्थिक संकट के समय गुल्लक से बाहर निकालकर मेरा सदुपयोग किया जाता है। बच्चे अपनी गुल्लक में जमा धनराशि के स्वयं मालिक बनने का अनुभव कर प्रसन्न रहते हैं।

मैं पहले एक मनुष्य के पास बहुत दिनों तक रहता था। जनसंख्या वृद्धि के साथ-साथ आवश्यकताएँ भी बढ़ी हैं और मेरे चलन की गति भी बढ़ गई है।

आर्थिक उन्नति के बाद मेरी यात्रा और विस्तृत हो गई है। मेरी गति के साथ-साथ मेरे नए साथियों की संख्या भी बढ़ी है। मेरी इस गति के कारण तथा टकसाल में नए साथियों के न बनने से मेरी कमी कभी-कभी समस्या बन जाती है। इस कमी को दूर करने के लिए कागज के नोट छापे जाते हैं।

किन्तु कागज के नोट की तुलना में मैं अधिक समय तक अपनी सेवाएँ देता हूँ। इसीलिए मेरा अस्तित्व अभी तक बना हुआ है। मैं अजर-अमर हूँ। मेरी यात्रा अनंत है। जब तक जीवन है, मैं चला हूँ, चलता रहूँगा।

शब्दार्थ

मनमोहक=मन को लुभाने वाला। **अयस्क**=कच्ची धातु। **पदचाप**=पैरों की आवाज़। **धधकती**=तेजी से जलती। **टकसाल**=सिक्के ढालने का स्थान। **अत्यधिक**=बहुत अधिक। **मुग्ध**=मोहित। **विश्राम भवन**=आराम करने की जगह। **अल्पबचत**=थोड़ी बचत। **निर्बाध**=बिना रुके, लगातार।

अनुभव विस्तार

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. **(क) जोड़ी बनाइए—**
   - आर्थिक - यात्रा
   - विश्राम - समय
   - प्राचीन - उन्नति
   - अनंत - भवन

   (ख) दिए गए शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—
   - टकसाल की चहल-पहल देखकर मुझे .... वातावरण का अनुभव हुआ। (नवीन/प्राचीन)
   - कई मशीनों की गड़गड़ाहट वातावरण में .... लगी। (चुभने/गूँजने)
   - वास्तव में मुझमें अनेक प्रकार की .... मिली हुई थीं। (धातुएँ/वस्तुएँ)
   - मनुष्य की .... उन्नति के बाद मेरी यात्रा की गति बढ़ गई है। (मानसिक/आर्थिक)

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दीजिए—

(क) सिक्के को पाकर मनुष्य कैसा महसूस करता है?

(ख) धरती की सतह के अन्दर सिक्के का रूप कैसा था?

(ग) टकसाल किसे कहते हैं?

(घ) सिक्के के विश्राम की जगह कौन-सी है?

(ङ) प्राचीन समय में सिक्के किन-किन धातुओं के बनते थे?

लघु उत्तरीय प्रश्न

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन से पाँच वाक्यों में दीजिए—

(क) धरती की सतह से टकसाल तक सिक्के की यात्रा कैसी थी?

(ख) स्वतन्त्रता के पश्चात् सिक्के के रूप में क्या परिवर्तन हुआ?

(ग) अल्पबचत की आवश्यकता क्यों है?

(घ) कागज़ के नोट की तुलना में सिक्का अधिक समय तक अपनी सेवाएँ क्यों देता है?

(ङ) सिक्कों की कमी क्यों हो जाती है?

भाषा की बात

4. निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए—

गड़गड़ाहट, अयस्क, प्रजातन्त्र, अस्तित्व

5. निम्नलिखित शब्दों की वर्तनी शुद्ध कीजिए—

चिन्ह, अत्याधिक, जनम, कष्ट, मनुश्य

6. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द कीजिए—

नवीन, सम्मान, कैद, अपना, भारी

अब करने की बारी

- नोटों की उम्र लम्बी करने के लिए आप क्या करेंगे?
- वित्त सचिव के हस्ताक्षर किस नोट पर होते हैं? अपने शिक्षक या अभिभावक से जानिए।
- कक्षा में एक बचत बैंक खोलिए और सहपाठियों के खाते खोलिए।
- 'समाचार-पत्र' की आत्मकथा लिखिए।